

ॐ नमः ४ ग्री वरुणस्त्राय ४ ॥ थन विधि थं थ पनायाय ॥ गुरुमं तुल आदि
 विधि थं पूजा कुंशलाव ना ॥ ॐ वज्रं मृगाद गठ थ हं ॥ ॐ नमः २ महान क स्वाहा ॥
 मसु कि निजल वृषं विहाय ॥ ॐ मृग टि निशू कु हं काल पचिल नं मसु पणं पूर्व
 धन, अरु व क, या मय क पू, ने मय विधि थं, पश्चिम सह विन, वायु व निल, ॐ
 आन जित, न रु मध्य सर्व प्रश्न, अर्द्ध चंद्र हा घन, ऊरु म कूठ, चं लु म सुला स
 नरु, य ॥ पविनं सर्व पय हस्त, व म प द्या रु य ना नान् ग न शु क व सु शा

नि क कृषं विहाय ॥ पमा धूप नि मां ऊ न पूजा ॥ ॥ हा म याय ॥ माम कि
 पूजा ॥ न किलं ला व ना ॥ ॐ उप वि ल व या किल अ ल म क गू न्वा काल मूप
 नि व रू गु चि क व र्जा कालं सर्व विद्या न का, का वं, किल कं हं विचि त्वा ॥ ध्रु
 प नि मां ऊ न ॥ पूष न्वा ॥ ॐ आ ४ ऊ मा न का य स्वाहा ॥ पु र्गं न ॥ पु र्गं न ॥
 विद्या न ॥ ट किं ना ऊ ॥ निल दं लु ॥ च व ॥ मा हा व ल ॥ ॐ ध्रु व ॥ सु म् न ना ऊ ॥
 जा प ॥ सि रं ल य ॥ थ न द व पूजा ॥ दान पूजा ॥ च क रिं डं न किलं नाय ॥

हावना ॥ ५० ॥ रूपाचार्य आकाशपत्रमं विहाय ॥ यंका प्रलवाय मं तुलं लं
काल आग्नि मं तुलं वं कालन महा समुद्र नल अषि न लं का प्रल चतुव
सं पिन मा हृदु मं तुलं नद प जि स का प्रल अषु वल मय स म व विहाय ॥ न
द प जि हं का प्रल विश्व व डं म पितृ मि विहाय ॥ ननु मध्य ऊं का ना
वि द्वि न वे या प्रल रूपान् न प जि स म न कटांग म व विहाय ॥ पूजा ऊं
धं वा ॥ धन दान वि ॥ वलि वि य ॥ वलि पूजा ॥ हावना ॥ ५० ॥ बुद्धाय नि पि

ना मा हृदु विश्व का को मा यित्र का वषू वि ष मा वा ना ही व का ॥
दुय नि कं कु मा वा म लु व का महा ल क्री नि ना ग स पति महा काल रं व
वरुण पाल कु मा व सिं धि नी बां धि नी स्व स्व स्तु न स्वा धि का व स्व स्व हृद
य वि रु रु न दि ना ग रु रु रु द श दि रु रु मी दान प न अ म क स गृ ह अ
गु को म ना सि दी आ वा ह नं हा व य न् ॥ धूप थ ने ॥ ॥ स व लं च न य ॥ ५० ॥
दी आ व म नं पु नि क्क स्वा हा ॥ न ना यं का प्रल वाय मं तुलं लं का प्रल अग्नि

मंगुलं गणपति विमिश्रं कुरु चूडिकायां शीतपत्रं लंजनं नरुहकादि
पत्रिपूरीतं नभापत्रिकं आंजिखं हलां मां पां नां वं कालं ज्ञानं पञ्चमन
पंचपदियपत्रं पञ्चमन ॥ ३ ॥ आ ४ हं आ कालं ज्ञानं वसुधैव कुटुम्बकम्
कावजं पञ्चवायुस्वरो वं पञ्चपुनाका स्वाकावजबाहू किस्वरा वं उ
पविस्व हाकावजं विचित्रं पृथुमाला व ह मत्स्या का व व कं उं का
वजं मिलादिपिष्टं जं कावजं व कं दो कावजं मत्स्य खं कालं जं मां सु

हं कावजं सर्ववर्तिकं उ वं वधि व मत्स्या मां स व का व का पविन सर्व
वसिन् पुनादिचिद्रयथाक्रमं पुथागवा जा न सि न पा व व ल रि न
कं न्या कृ १ का धुनि धान काम व कं ला स ह ग के दा व व दु पृष्क
व पू व काल जालंध व माल व कं ला न द वी का ठ ल म क रू मा व न स्व
व अ टा ट हा स विलज्जा वा ऊ गु ह म हा पं थ काला पत्रि काल स्व
व ऊ यं कि उ ऊ यं नि व वि ना पल क्रि व क पल ह रि ना पल अ डि

या न. षष्ठिसप्त मायापल. ऊलक्षेत्र. मलय भंज. होत्र भयू. गित्री.
गित्रीचत्र. महदु वावन. हि वंथ महालक्ष्मी. उदियान. सु
याऊ. कृटि वर्ष विहाय ४॥ ॥ यन ०० द्वादिसूदा ॥ लोक
लवलि ॥ पंचपुहा पूजा ॥ ॥ ननाञ्जली कालित्यादि ॥
अंनोत्पानू गता ॥ ॥ उं कं वर कं वर त्यादि ॥ १ ॥ ॥ उं खर खाहि र
त्यादि ॥ ॥ ॥ उं ०० द्वादिवज्रित्यादि ॥ ॥ ॥ उं नमा वल्ल

यायत्यादि ॥ ॥ ॥ उं आ ४ सर्व सधर्मा दगदिग लोक धातु अनं
कगग दसमूद वृहपुष्पा वलसमाली कपाला. सर्व सत्वानाश्च ॥ नश्र्थं ॥
उं वं ज्ञाय धर्मायां वज्र वज्र न व वज्र काल. वज्र याक स नाग वज्र वज्र निल. व

१३० नमः श्रीवज्रसूत्राय ॥ ॥ ये अतिथि कविधिमाह ॥ न कर्मगुणस्य ० वा
 यगुणमधुनयचगद्यच्छायः भिन्नुगयक आदियच्छुक्रपूजा आदिसमयः
 लेखवलि विहाकेनः श्रीसमाधि क्लेशनाशः मूलमृपूजाः दत्तापूजा ॥
 धनलिमिष्यपनिलसासीदयाडाः स्वस्तिकसंख्याः गूनुमधुलदनकः मतपूजा
 याचकः सगाकचविहाकेन ॥ ये च गद्यविद्यासिध्याधिवासनः लाहगिनकाष्ठ
 धनचलमधुलवायकः गुन्यानदादनय ॥ धनगुनस्त्वपालिसुअद्योचकः सा
 ददः नायजकतः लः शयुदाहास्त्रीः श्रीवसनस्य ॥ वाक् ॥ ३३०ः पुववसस्का नाय

सगगुनः चनक्षयस्का नायपञ्चवजा चायाय सत्कामवा ३३० पादा अद्य प्रागक्तस्वाहा ॥
 ये अद्यदाजपूजाः गुन्यानपालिसदकणादं २ गस्ये नमस्का नयायगुनदा स्तान
 यः लेखनदाय ॥ ३३० स्कासर्षान ॥ ॥ गुनस्त्वदाथजा जलपेजानः अखपत्ता
 याचक ॥ ॥ वाधिवज्रहावृद्धानाः यथा दत्तामहात्मद ॥ ममापिताः नना
 र्थयः खवजादिददादिम ॥ ॥ वाधिवजनथानेतेः वृद्धपूजयनिस्तः अतिथि
 कविलः अर्थजयनिलकायाय याग खवजादिगर्ध्वविन अर्थविद्वन्महगुन ॥
 शिष्यारावना ॥ नजभनि लिखिगाष्टलठकमलाय विचदुस्य उयविला शिष्य
 वज्रधनपूये विराय ॥ आकर्षण ॥ वजीक गाजः वज्रपागादी वज्रस्वाटवीः वजीव

ॐ नमो भगवते

ॐ नमो भगवते	ॐ नमो भगवते
८८	

मंदा॥ पा॥ ५
 मगदु॥ पुनरावना॥ नदनसुखद्विजमयूरव
 जानीगानकदिवर्ति नरुथागनविद्यादवीधसंपूक॥ दवनास्किगुनूसैः पूया
 दिपुजा॥ मध्यावना॥ ॥ बुधानारिषककुजगलासीयवजिना॥ गुनाकजा
 नथादरुः नथादध्वमस्यहिम॥ ॥ वृद्धपनिस्तुः अरिषकविजसंसावउज्ञान
 याययागगुणा कनधायागथागनीः गत्यविलः थर्थीतिपनिस्तुविहून॥ ॥
 माजानकुंभः क्षिप्तसदिचकंनयाउरावना॥ ॥ गथागनेप्रह्लासमापन्नः मरु
 जागमदविरुयवेनाजनवाजधकनोयधः वजमार्गमनिगत्यः गदुवेदवीः पम

मखनप्रवर्तिनीः क्षिप्तमटिनिगुनगानकवीः कुंजजानद्विजुजसहप्रह्लाकोयः स्वः
 तावैसंस्वनयैहानसत्वारिन्नयतिविद्य॥ पुनरुजामखादिमूलिहिरपनाः
 निधिरुः गगलमायूर्यसिनेलाचनादिवीआसनेभूधजयवटाकावमुवाः
 यिगगीननृत्यपूयकूमादिवृष्टिरिठकचकिठालः यावकूवावाधिविला
 मृतसिगकचलोः सुमिष्टीयमानिहरीत्यअरिषिचमानैथागीनीगनगी
 यमानैः मगलगिनी॥ ॥ कुंठालैरवभूरिषकविय॥ यत्संगलैसकलस
 तः द्रुदिल्लिगस्य॥ त्यादि॥ ॥ यनपागमाउसदिनकै॥ ॥ थखजालानकायाश
 स्वपोलनांक॥ ॥ मंसासखवजसत्वारिकननामरिषिचामिः सर्वगथागनाधिव

एनदडाहव॥ गुनसुखीखनःउलगनदवदाय॥ अरिषकीमदावजनेधा
हुकीनमस्करी॥ ॥ ददामिसर्ववदानीगिगुफालयसकव॥ ॥ अरिषकवज
उउलिहं स्वर्गमध्यापागावर्धनमस्कात्रयाडागज॥ ॥ धर्धिगुअरिषकजिनवि
या स्वगारुदनउत्यमिहव॥ ॥ अंवडादकाहिरिषिचं सजगत्समर्द॥ ॥ यंचापदा
नपूजा॥ ॥ निउदकाहिरिषक॥ पुनः अर्धवना॥ ॥ वाधिवजनवदानी
जुथादलीमदात्मरु॥ ॥ समायिगाननाथाय स्ववजायददाहिमा॥ ॥ वाधिव
जुवदयानगथविजजियनिनकायाययाग स्ववजादिवियाथंमकुटाहिरिष
कविद्वन॥ ॥ रावना॥ ॥ गिथीउं आवनलसकव नूपानेकानसत्वेकीरुग

नरसुगथागनदविरिषकुं रंवरिषिचमानेनूपवजादिरिः नूपनियमानीमेर्ग
लगिगीरावयगु॥ ॥ अरिषकीमदाईरणादि॥ ॥ ॥ धमकुगुसमर्दनथाग
गनेगिरुवनंस्वर्गमध्यापागावर्धनमस्कात्रयाडागज॥ ॥ कंस्वपूजायाचकया
गः अर्थन धमकुटकाइनः पचेकूलसजागजला॥ ॥ ॥ मिसायागसिधुकायः
मिजनयागवाहनसगय॥ ॥ उंआविग॥ ॥ अस्याद्वयदंरुत॥ ॥ मकुटयूयकाउम
कुटदिलेक॥ ॥ उवजधनं ध्वनिअरिषिचरुं॥ ॥ उंवजसत् अरिषिचरुं॥ ॥ उंनलः
वजिअरिषिचरुं॥ ॥ उधर्मवजिअरिषिचरुं॥ ॥ उंकर्मवजिअरिषिचरुं॥ ॥
उवजमकुयारिषिचः सजगत्समर्द॥ ॥ ॥ खिलखनहाय॥ ॥ उआवजमकुटाहिरिषि
चंआवसजगत्समर्द॥ ॥ उवजगुछरुं॥ ॥ ॥ ॥ ॥ सर्वताममृगुवागुकरावाइकवसि

ता ॥ अरुह्य न संख्य ना क दी मन जगत् ॥ समस्त राव सीम चाठ ॥ गुलि ताव अ
 क जल आठ ॥ हाना कर्त जे डय एड ड ॥ रादा करी मय ॥ अविनास मय ॥ ॐ ति म कुटा
 रिषक ॥ ॥ अथ वक्षः ॥ वाधिवजन वृक्ष नीय थ द रु म हा म द ॥ समापि नान ॥
 नास्तु युख वजा य द दा हि म ॥ वाधिवजन वृक्ष मृग य निस्तु ग थ अरिषक विन अर्थ
 जिय निस्तु ख वजा दि वि या थ वि दू न जिय निस्तु वजा रिषक वृ ॥ ताव ना ॥ अथ पि
 तवर्क निष्पदी ॥ य य निन ग मि नार नू यै ॥ हान स चारि नं निष्प वजं अ मि नार स क वि
 चि न्ता ॥ वज वि य ॥ अथा रिषि क स्तु म सि वृक्ष वजा रि क न ॥ ॐ द न सर्व वृक्ष नी ग
 द वज स सिद्ध य ॥ ॥ अथ अरिषक वि या नै सम स्तु न वृक्ष इ य क या ग वज या अरि

यक ॥ अथ समस्त वृक्ष राव जय क या ग का उः ॥ अथि गु वज च य निस्तु रिं गु सिद्धि नायू ॥
 सिष्य या नू ग दः क थू क या नू थि य क वि ॥ उ वजा रिषि क स ज न स्तु म दं ॥ ॐ ख ले ख न
 दा य ॥ ॥ सर्व सं ह ॥ एक वक्ष आ का नी कू ज सी र वा ॥ म दा व क प द पा फ न सी रू न च सी हि
 नै ॥ समस्त स्य ये च ना व रू न आ का न सी ड त्प रि कू व ॥ म दा अ क प द ना गः म जि ज म य
 उ अ थ नि ध क थ द म द ॥ ॐ ति वजा रिषक ॥ ॥ अथ वक्षः ॥ वाधिवजन वृक्ष नीय थ
 द रु म हा म द ॥ समापि नान नार्थ यः ख वजा दि द दा हि म ॥ ॥ वाधिवजन वृक्ष या ग थ
 वि अर्थ जिय निस्तु वजा या य का न र्ण ख वजा दि वि या थ वि दू न जिय निस्तु य त्प रिष
 क ॥ ताव ना ॥ निष्पदी खं का आ स नं अ मा य सिद्धि हान स चारि नं निष्प वजं अ मि नार स क वि
 दि वि रा य ॥ अरिषक म हा वज ॐ द्या दि ॥ उ वज धि य रि ता म रि वि च मि नि थ वज स म

यस्यं हा॥ वज्रघट्टमृष्ट गृह्णित्वसिमयारुगवनमदिसन्निदिता॥ ख॥ धनघट्टविरा॥
 हीखलैखनहाय॥ अं वज्रघट्टमृष्टिचिचसुनतत्वमद॥ ॥ अनुरूपनमृधर्ममृसस्काच
 लदितमृनवृद्धिनचवृद्धलैनसत्वनववर्जकी॥ ननरुचननृनताकवृद्धा॥ लित्रज्ञनाद
 याधिय॥ धमादयाबाधयिनुधर्मादयासजकी॥ उत्पलिनमृष्टाधर्मससयेमदू॥ वृद्धिमधु
 वृद्धस्वरावममृसस्वस्वाकममृनिनृपनायायमजिअमृकाचकायमजिअ॥ हानउदयशजिअ
 नाजार्थ॥ धर्मार्थउदयशवधर्मदियार्थगूयः॥ यथिगुनिघट्टमृष्टिचि॥ अर्धममृवाः
 धिवज्रनवृद्धा॥ नोयथादर्कमहामद॥ ममायिमाननार्थस्वय॥ स्ववजासीददाहिनी॥ वाधि
 वजनवृत्तागगथवि॥ अर्थजिपनिलकायायकाचनी॥ स्ववजादिं विचार्यविद्वननामालिषक॥

रावना॥ शिष्यीअका॥ नायनैचक्रसंरुगंवेनाचननृपेहानसत्वारिनेविराया॥ धनघट्टः क
 पालसधियर्क॥ अं वज्रसत्त्वामरिषिचामि॥ वज्रनामालिषककृष्णी॥ अका॥ स्ववज्रनामतथागतह
 उवस्व॥ नामचुय॥ ॥ हासवज्रः विनासवज्रः वतिवज्रः लिनावज्र॥ ॥ सम्वनपिष्टीकर्म
 हवज्रदगुलियोय॥ अं वज्रनामालिषिचसुनतत्वमद॥ हीखलैखनहाय॥ विज्ञानधर्मता
 निने॥ हानाविनगुडाहनाविना॥ पुदुर्हिनेपुलावधर्मधामुगतिगती॥ ॥ विज्ञानध
 मीसातावग्यानगुद्धिषाठ॥ दयकास्वरावर्थधर्मधामुस्वराव॥ ॥ गतिनामालिषक॥ ॥
 उनेमायाउदकाः मकूटाः वजाः घट्टनामादयः स्वदलिषकचति॥ एरिचरिषकः क्रिया
 चर्याः तंरुजाजं वावनः वात्यानः मरुसाधननृवाधिरुतातवति॥ ॥ धनंअलिषकजात
 नाजः क्रियायः तंरुजाजनायायः उनः हानायाः मरुसाधय॥ धनंअधिरुगज्ञा॥ धूतिधू
 नकाजः मकूटवज्रः घट्टकोकाया॥ अर्धममृ॥ ॥ वजाचार्यालिषकशासददहिकपा

हिंसां॥ सायनार्थसमयथस्यान्यनादलपयम॥ वजाचार्यहिवकः॥ रुगुनूः॥ रुनार्थः॥ जिपनिक
 हुनः॥ रुदयावकन॥ रुथार्तः॥ मवयार्तः॥ समष्टयार्तः॥ गथडिबोकाजना॥ रुगुनूः॥ रुलपालया
 पुमादकेना॥ रुवना॥ शिष्यमर्चावकाजनुषिताउचितचक्रधजप्रकाशकनः॥ पूर्वकायः
 सिद्यासनः॥ रुविचिशष्टदवकमजापविसिद्धिर्नध्यायात॥ ॥ कखायगाविया॥ वजसत्व
 यनपत्रया॥ अकायस्वयुधनः॥ मकूटनपायक॥ धनवजविया॥ रुकाजर्जवर्जध्यात्वा॥ ॥
 अनादिनीधनसत्ववजसत्वमाहात्म्य॥ समकृतदुस्वात्माः॥ वजगद्गापतिपति॥ ध्यात्वा
 रुधनर्थसवयाः॥ वजसत्वयाहाचिंनसंतयाः॥ समकृतदुयाः॥ आत्माध्याः॥ वजगद्गायाजा
 थथिवज॥ ॥ रुदपट्टटिविभुधयूगनद्धवाधमधिगकुअद्विहवगियमानोक्तनन
 स्वरुववजध्याननियामान॥ वजारिषक॥ ॥ घृष्टविया॥ अकाजर्जघृष्ट॥ रुयसासर्व

वृद्धानाः॥ घृष्टध्यानानुस्मृता॥ त्रयापिदि सदाध्यायिवाधिवगुजिनेमता॥ अभाघृष्टसकभंन
 थागगयाः॥ घृष्टध्यानाद्वनमनर्षदुता॥ थथिगुघृष्टकवसनः॥ सदीधनः॥ लपिडागथ
 गतयामन॥ ॥ चतुर्नासितिस्वन्धसहस्रादसनादियर्नः॥ गथागतानिधिकाजनाय॥ सा
 रुवसुद्धिदिरुवधर्मस्वरुवेविबेरुविकृत॥ स्वरुवगुद्धः॥ सत्सुधेकियनपत्रभाहव॥ ॥
 अलिङ्गमूद्रायाचक॥ मूद्रादिसमयाप्राका मनामलिहृदस्वतः॥ सर्वमूक्तिदरायनर्त
 नेमूद्रापुक्किता॥ वजसत्वेनसगुधः॥ घृष्टधर्मनवायन॥ समयसूचमहामूद्राअधि
 ष्टयद्रयाजपत्र॥ उासूयनिष्ठितवजस्वाहा॥ नूचिमननिचक॥ धनघृष्टसमयवि
 यके॥ गुनूनेपत्रया॥ ॥ दक्षीसिमयारुगवनमयिसनिदिनाहव॥ जापयाचविया॥
 शिष्यनयनया॥ रुदिनासिमयारुगवनमयिसनिदिनाहव॥ धपदपाडाजापकाया॥

